

उत्तराखण्ड की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Manoj Kumar Das,

Head of Department, Dept. of Education,

Keshav Suryamukhi College of Education (Affiliated to Kumaun University Nainital)

सार

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता की जांच करना है। इस प्रयोजन के लिए उत्तराखण्ड के 8 स्कूलों (4 सरकारी और 4 निजी) से कक्षा 9 के 400 छात्रों (200 लड़के और 200 लड़कियों) का नमूना लिया गया। इस प्रयोजन के लिए डॉ. यशवीर सिंह और डॉ. महेश भार्गव द्वारा भावनात्मक परिपक्वता स्केल (1990) और आठवीं कक्षा की शैक्षणिक उपलब्धि का उपयोग किया गया। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध का पता लगाने के लिए पियर्सन उत्पाद क्षण सहसंबंध का उपयोग करके परिकल्पना का परीक्षण किया गया। अध्ययन से पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालय के अधिकांश छात्र भावनात्मक परिपक्वता के मामले में बेहद अस्थिर हैं। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच अत्यधिक सकारात्मक संबंध मौजूद है।

परिचय

एक व्यक्ति भावनात्मक और बौद्धिक, दो पहलुओं का संयोजन है। अधिकांश मामलों में भावनात्मक पहलू बौद्धिक पहलू से बेहतर होता है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्धारण में बौद्धिक पहलू की अपेक्षा भावनात्मक पहलू अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यक्ति के विकास में भावनाएँ अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं चाहे वह एक नेता हो, एक सामाजिक कार्यकर्ता हो, सफल व्यवसायी हो, एक छात्र हो या फिर एक माँ हो।

भावनाएँ: मानव जीवन के संपूर्ण काल में भावनाएँ महान प्रेरक शक्ति हैं। किसी व्यक्ति की आकांक्षाओं, कार्यों और विचारों को प्रभावित करना। हमारी भावनाओं में हमें नाजुक और परिष्कृत मार्गदर्शन प्रदान करने की क्षमता है। भावनाएँ बुनियादी चीजें हैं जिनसे सारी प्रेरणा उत्पन्न होती है, यह न केवल हमें कार्रवाई के लिए

प्रेरित करती है बल्कि अक्सर कार्रवाई के लक्ष्य के रूप में भी काम करती है। वुडवर्थ (1945) ने भावना को किसी जीव की “आगे बढ़ने वाली या उत्तेजित” अवस्था के रूप में परिभाषित किया है। यह भावनाओं की एक उद्वेलित अवस्था है, अर्थात् जिस प्रकार यह बाहरी व्यवहार से प्रकट होता है। हॉकेनबरी और हॉकेनबेरी (2007) के अनुसार, “एक भावना एक जटिल मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसमें तीन अलग-अलग घटक शामिल होते हैं: एक व्यक्तिपरक अनुभव, एक शारीरिक प्रतिक्रिया और एक व्यवहारिक या अभिव्यंजक प्रतिक्रिया”। किसी की भावनाएँ भी यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं कि कोई उद्यम सफल है या नहीं। वे किसी विशेष घटना के प्रति विशिष्ट प्रतिक्रियाएँ हैं। वे हमारे विचारों और कार्यों के बीच एक सेतु का काम करते हैं।

भावनाएँ किसी व्यक्ति के जीवन में शक्तिशाली नियामक शक्ति हैं। भावनाएँ वह ऊर्जा है जो मन को काम करने के लिए प्रेरित करती हैय यह व्यक्ति के अस्तित्व के लिए ऊर्जा की आपूर्ति करता है। भावनाएँ चाहे शारीरिक हों या मानसिक, जीवन के लिए आवश्यक हैं और व्यक्ति को एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती हैं। इसे एक जादुई शब्द कहा जा सकता है जिसे परिभाषित करना कठिन है—यह मानव जीवन को गतिशील बनाता है। यह भावना की जटिल अवस्था है जो शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन लाती है जो विचार और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। यह सबसे शक्तिशाली स्रोत है जो मनुष्य के व्यवहार और कार्यों पर बल डालता है।

परिपक्वता: परिपक्वता का अर्थ है बचकानी बातों को त्यागना और स्वयं को एक वयस्क के रूप में पढ़ना, जो सांसारिक मामलों में सामान्य रूप से व्यक्ति पर विकसित होने वाली जिम्मेदारियों को निभाने के लिए तैयार है। फिनले (1996) के अनुसार, परिपक्वता “किसी व्यक्ति की अनिश्चितता, परिस्थितियों या पर्यावरण के प्रति उचित तरीके से प्रतिक्रिया करने की मन की क्षमता को सहन करने की क्षमता है।” परिपक्वता मन की क्षमता और किसी व्यक्ति की अनिश्चितता, परिस्थितियों या वातावरण पर उचित तरीके से प्रतिक्रिया करने की क्षमता है।

भावनात्मक परिपक्वता: भावनात्मक परिपक्वता स्वस्थ भावनात्मक विकास का परिणाम है। भावनात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति वह होता है जो सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीके से अपनी भावनाओं/भावनाओं पर नियंत्रण रखने में सक्षम होता है। यह व्यक्ति की क्षमता और शक्तियों और उनका उपयोग करने और आनंद लेने की उसकी क्षमता का पूरा दायरा है। भावनात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति मूड में बदलाव करने में सक्षम होता है और चुपचाप पीड़ित हो सकता है। जब वह भावना व्यक्त करता है, तो वह संयम के साथ, शालीनता से और अच्छे क्रम में व्यक्त करता है। भावनात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति वह है जो अपनी भावनाओं को सही समय पर उचित तरीके से व्यक्त करता है। अर्थात्, भावनात्मक परिपक्वता का अर्थ है उचित समय पर उचित रूप और उचित गुणवत्ता में व्यक्त करने के लिए भावनाओं का होना। स्मिटसन (1974) के अनुसार, भावनात्मक परिपक्वता “एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तित्व भावनात्मक स्वास्थ्य की बेहतर समझ के लिए लगातार प्रयास कर रहा है, दोनों आंतरिक—मानसिक रूप से और व्यक्तिगत रूप से।” भावनात्मक परिपक्वता किसी व्यक्ति की सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण बनाने की क्षमता का माप है। भावनात्मक परिपक्वता को इस रूप में परिभाषित किया जाता है कि हम स्थितियों पर कितनी अच्छी तरह प्रतिक्रिया करने, अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने और दूसरों के साथ व्यवहार करते समय वयस्क तरीके से व्यवहार करने में सक्षम हैं।

उपलब्धि: उपलब्धि किसी दिए गए कौशल या ज्ञान के समूह में उपलब्धि या दक्षता है। यह स्कूल में प्रगति सैद्धांतिक रूप से बुद्धि से अलग है लेकिन काफी हद तक इसके साथ ओवरलैप होती है। गुड सी.वी. के अनुसार (1959), “उपलब्धि किसी दिए गए कौशल या ज्ञान के निकाय में प्रदर्शन की उपलब्धि या दक्षता है।” उपलब्धि वह शब्द है जिसका उपयोग किसी सामान्य या निर्दिष्ट क्षेत्र में प्राप्त सफलता के स्तर को इंगित करने के लिए किया जाता है। यह ज्ञान की प्राप्ति है जो व्यक्ति को भविष्य में असफल होने वाली परिस्थितियों में इसका उपयोग करने में सक्षम बनाएगी।

शैक्षणिक उपलब्धि: हमारे समाज में शैक्षणिक उपलब्धि को किसी की कुल क्षमताओं और संभावनाओं को आंकने का एक प्रमुख सिद्धांत माना जाता है। इसलिए शैक्षणिक उपलब्धि का शिक्षा के साथ-साथ सीखने की प्रक्रिया में भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। शैक्षणिक उपलब्धि शिक्षा का परिणाम है। उत्तरदाता, शिक्षक और संस्थान अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इसे आमतौर पर परीक्षाओं या

निरंतर मूल्यांकन द्वारा मापा जाता है लेकिन यह संस्थानों से संस्थानों में भिन्न होता है। शैक्षणिक उपलब्धि एक ऐसा शब्द है जो उत्तरदाताओं के प्रदर्शन को दर्शाता है। क्रो और क्रो (1985) के अनुसार, शैक्षणिक उपलब्धि "वह सीमा है जिससे एक शिक्षार्थी सीखने के दिए गए क्षेत्र में निर्देशों से लाभ उठा रहा है यानी उपलब्धि उस स्तर से प्रतिबिंबित होती है जिस स्तर तक उसे कौशल और ज्ञान प्रदान किया गया है।" शैक्षणिक उपलब्धि स्कूल विषय में प्राप्त ज्ञान और विकसित कौशल को भी इंगित करती है, जिसे आम तौर पर परीक्षण अंकों द्वारा निर्दिष्ट किया जाता है।

कौर (2013) ने लिंग और संस्थान के प्रकार के संबंध में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन से पता चला कि लिंग और संस्थान के प्रकार के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। अग्रवाल (2013) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता, भावनात्मक परिपक्वता और आत्मविश्वास के संबंध में हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर एक अध्ययन का निर्देशन किया। अध्ययन से पता चलता है कि भावनात्मक परिपक्वता के निम्न और उच्च स्तर के संबंध में हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर है। मल्लिक एट अल., (2014) ने उच्चतर माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि पर एक अध्ययन किया। अध्ययन लिंग और स्कूलों के प्रकार के संबंध में भावनात्मक परिपक्वता के अध्ययन पर केंद्रित था। अध्ययन से पता चला कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र भावनात्मक रूप से अस्थिर हैं, पुरुष और महिला छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं है और सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं है। सुब्रमण्यन और वेलियाप्पन (2013) ने लिंग और संस्थान के प्रकार के संबंध में हाई स्कूल के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता पर एक अध्ययन किया। अध्ययन से पता चला कि निजी छात्र सरकारी हाई स्कूल के छात्रों की तुलना में भावनात्मक रूप से अधिक परिपक्व होते हैं और हाई स्कूल की लड़कियां हाई स्कूल के लड़कों की तुलना में भावनात्मक रूप से अधिक परिपक्व होती हैं। सुरजीत (2014) ने हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में भावनात्मक परिपक्वता की भूमिका पर एक अध्ययन किया।

अध्ययन से पता चलता है कि हाई स्कूल के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं था और लड़कियां लड़कों की तुलना में भावनात्मक रूप से अधिक स्थिर हैं।

महत्व: भावनात्मक परिपक्वता आधुनिक सभ्यता का एक महत्वपूर्ण घटक है और प्रगतिशील आगे बढ़ने वाले समाज के सदस्य का आवश्यक गुण है। राष्ट्र की गुणवत्ता उसके नागरिकों को दी जाने वाली शिक्षा पर निर्भर करती है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। वर्तमान अध्ययन के नतीजे एक आधार प्रदान करेंगे जो किशोरों की उपलब्धि को मजबूत करने या सुधारने में मदद कर सकता है। यह अध्ययन शैक्षणिक उपलब्धि के साथ भावनात्मक परिपक्वता को सहसंबंधित करता है जो माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समृद्ध और उज्ज्वल भविष्य के लिए बड़ी उपलब्धियों का कारण बन सकता है। यह अधिक विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाने की जानकारी भी देगा जो बाल शैक्षिक कार्यक्रम के विकास में भी मदद कर सकता है।

उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
2. भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन करना।
3. भावनात्मक परिपक्वता के संबंध में सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच अंतर का अध्ययन करना।
4. भावनात्मक परिपक्वता के संबंध में पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच अंतर का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक सकारात्मक संबंध मौजूद है।
2. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच उनकी भावनात्मक परिपक्वता के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
3. भावनात्मक परिपक्वता के संबंध में पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

कार्यप्रणाली

उपकरण का उपयोग: डेटा के संग्रह के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरण हैं: (प) डॉ. यशवीर सिंह और डॉ. महेश भार्गव द्वारा भावनात्मक परिपक्वता स्केल (1990), (पप) आठवीं कक्षा के लिए चुने गए छात्रों के परीक्षा परिणामों के रिकॉर्ड उनके शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर एकत्र करने के लिए नमूने से परामर्श लिया गया।

नमूना: वर्तमान अध्ययन में 8 विभिन्न स्कूलों (4 सरकारी और 4 निजी) से कक्षा 9वीं के 400 माध्यमिक विद्यालय के छात्र। 400 छात्रों में से 200 (100 पुरुष और 100 महिलाएँ) सरकारी स्कूल से थे और 200 (100 पुरुष और 100 महिलाएँ) निजी स्कूलों से थे। डेटा के संग्रह के लिए अनुपातहीन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया था।

डेटा का संग्रह: स्कूल के प्रधानाचार्य की अनुमति से, शोधकर्ता छात्रों से डेटा एकत्र करने के लिए नौवीं कक्षा में गया। यह परीक्षण 4 सरकारी और 4 निजी स्कूलों में पढ़ने वाले 13–15 आयु वर्ग के छात्रों पर नियोजित किया गया था। अन्वेषक ने इस अध्ययन को आयोजित करने के उद्देश्य को समझाया और उन सभी छात्रों के साथ संबंध स्थापित किया जिन्हें नमूने के लिए चुना गया था। परीक्षण का संचालन करने से पहले, अन्वेषक ने उन्हें उत्तर देने का तरीका समझाया और उन्हें निर्देश पढ़ने और उसके अनुसार इसे भरने के लिए कहा गया। शंकाओं और भ्रांतियों को स्पष्ट किया गया और कथन का अर्थ पूछने की छूट दी गई जो उनकी समझ से परे थे। बाद में इसे अन्वेषक द्वारा एकत्र किया गया। नमूने के लिए चुने गए छात्रों की आठवीं कक्षा के परीक्षा परिणामों के स्कूल रिकॉर्ड से उनकी शैक्षणिक उपलब्धि एकत्र करने के लिए परामर्श लिया गया। डेटा एकत्र करने के बाद मैनुअल में दिए गए निर्देशों के अनुसार स्कोरिंग की गई। एकत्र किए गए डेटा को सांख्यिकीय प्रसंस्करण के अधीन किया गया और परिणाम प्राप्त किए गए।

सांख्यिकीय तकनीक: डेटा के विश्लेषण के उद्देश्य से निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया: माध्य, मानक विचलन, पियर्सन उत्पाद क्षण सहसंबंध।

परिणाम और चर्चा

तालिका-I माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के भावनात्मक परिपक्वता स्कोर दिखा रहा है

अंक	व्याख्या	छात्रों की संख्या	छात्रों का प्रतिशत
50-80	अत्यंत स्थिर	53	13.25 %
81-88	मध्यम स्थिर	44	11 %
89-106	अस्थिर	99	24.75 %
107-240	अत्यंत अस्थिर	204	51 %

तालिका-I दर्शाती है कि 400 छात्रों में से 53 छात्र (13.25%) अत्यधिक स्थिर हैं, 44 छात्र (11%) मध्यम रूप से स्थिर हैं, 99 छात्र (24.75%) अस्थिर हैं और अधिकांश छात्र यानी 204 (51%) हैं।) अत्यंत अस्थिर हैं। तालिका से पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालय के अधिकांश छात्र बेहद अस्थिर हैं।

वर्तमान अध्ययन से माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्वता से संबंधित कई उल्लेखनीय निष्कर्ष सामने आए। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, यह देखा गया कि इनमें से अधिकांश छात्रों ने उल्लेखनीय रूप से अस्थिर भावनात्मक परिपक्वता स्तर का प्रदर्शन किया। इस खोज से पता चलता है कि इन व्यक्तियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अपनी भावनाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में चुनौतियों का सामना कर सकता है।

इसके अलावा, अध्ययन ने भावनात्मक परिपक्वता और माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक मजबूत सकारात्मक सहसंबंध का खुलासा किया। यह सहसंबंध इंगित करता है कि उच्च भावनात्मक परिपक्वता वाले छात्र शैक्षणिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जो शैक्षिक सफलता में भावनात्मक विकास के संभावित महत्व को उजागर करता है।

दिलचस्प बात यह है कि अध्ययन में विभिन्न प्रकार के स्कूलों के बीच असमानताएं भी पाई गईं। विशेष रूप से, इससे पता चला कि सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र निजी माध्यमिक विद्यालयों में अपने समकक्षों की तुलना में उच्च स्तर की भावनात्मक परिपक्वता प्रदर्शित करते हैं। इस अंतर को विभिन्न कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जैसे शिक्षण पद्धतियां, संसाधन या सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि।

अंत में, अध्ययन ने लिंग अंतर की जांच की और पाया कि पुरुष और महिला छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्वता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। इससे पता चलता है कि, भावनात्मक परिपक्वता के संदर्भ में, माध्यमिक विद्यालय अध्ययन विशेष रूप से सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में छात्रों के भावनात्मक और शैक्षणिक विकास को बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण सिफारिशों पर जोर देता है।

सबसे पहले, यह अच्छी तरह से प्रशिक्षित शिक्षकों के महत्व पर जोर देता है जो छात्रों के सामने आने वाली विविध समस्याओं को समझने और उनका समाधान करने की क्षमता रखते हैं। दूसरे, यह भावनात्मक और

बौद्धिक विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए एक लोकतांत्रिक और पोषित कक्षा और स्कूल के माहौल के निर्माण की वकालत करता है।

इसके अतिरिक्त, अध्ययन से पता चलता है कि शिक्षकों को खराब शैक्षणिक उपलब्धि से जूझ रहे छात्रों का सक्रिय रूप से निदान और समर्थन करना चाहिए, अतिरिक्त समय और ध्यान देना चाहिए, खासकर उन लोगों को जो भावनात्मक रूप से अपरिपक्व या अत्यधिक चिंतित हैं। इसके अलावा, शिक्षकों को प्रेरणा के साधन के रूप में सकारात्मक सुदृढीकरण को नियोजित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

प्रशासनिक मोर्चे पर, अध्ययन मार्गदर्शन और परामर्श सेवाओं की उपलब्धता के साथ-साथ स्कूलों के भीतर मनोवैज्ञानिक प्रयोगशालाओं और सह-पाठ्यचर्या संबंधी सुविधाएं प्रदान करने की सिफारिश करता है।

माता-पिता की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्हें घर में एक स्वस्थ और मैत्रीपूर्ण माहौल बनाना चाहिए, अपने बच्चों को भावनात्मक रूप से परिपक्व होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और खुले संचार को बढ़ावा देना चाहिए ताकि बच्चे अपनी चिंताओं को साझा करने में सहज महसूस करें।

अध्ययन के प्राथमिक निष्कर्ष से पता चलता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र अपने निजी स्कूल के समकक्षों की तुलना में अधिक भावनात्मक परिपक्वता प्रदर्शित करते हैं। यह अंतर इस संभावना के कारण है कि निजी स्कूल के बच्चों को उनके माता-पिता और स्कूल दोनों द्वारा अत्यधिक आश्रय दिया जा सकता है। इसके विपरीत, सरकारी स्कूलों में छात्रों के पास अधिक खाली समय हो सकता है और इसलिए, समाज के साथ अधिक बातचीत हो सकती है, जिससे उन्हें कई तरह के अनुभव मिलते हैं जो उनकी भावनात्मक परिपक्वता में योगदान करते हैं। नतीजतन, अध्ययन से पता चलता है कि निजी स्कूल अपने छात्रों को स्वतंत्रता और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देने के लिए समाज के साथ जुड़ने और प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने के अवसर प्रदान करने पर विचार करते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन से पता चलता है कि अधिकांश माध्यमिक विद्यालय के छात्र भावनात्मक परिपक्वता के संबंध में बेहद अस्थिर हैं और माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच अत्यधिक सकारात्मक संबंध मौजूद है। इससे यह भी पता चलता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्र निजी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की तुलना में भावनात्मक रूप से अधिक परिपक्व हैं और महिला छात्र अपने पुरुष समकक्षों के समान ही भावनात्मक रूप से परिपक्व हैं।

अध्ययन की प्रमुख सिफारिशें बच्चे के समग्र विकास में भावनात्मक सुरक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती हैं। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, भावनात्मक सुरक्षा का न केवल बच्चे के शारीरिक विकास पर बल्कि उनकी भावनात्मक भलाई पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। प्यार और स्नेह प्रदान करने से बच्चे में सुरक्षा की भावना पैदा होती है, जो अंततः भावनात्मक संतुलन को बढ़ावा देती है।

शिक्षा के क्षेत्र में, माता-पिता को सलाह दी जाती है कि वे कम शैक्षणिक उपलब्धि के कारण अपने बच्चों को हतोत्साहित करने से बचें। इसके बजाय, उन्हें अपने बच्चों को निरंतर सुधार के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करते हुए प्रोत्साहन और समर्थन देने में सक्रिय रहना चाहिए।

माता-पिता और स्कूलों दोनों को सुरक्षात्मक और समृद्ध वातावरण स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो बच्चों को सुरक्षा की अधिक भावना प्रदान करता है। माता-पिता अपने बच्चों को परिवार के भीतर और घर के बाहर आपसी संबंधों में सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने के लिए मार्गदर्शन करने में भी भूमिका निभा सकते हैं।

शैक्षिक सेटिंग में, शिक्षकों और अभिभावकों को समान रूप से बच्चों को सकारात्मक और रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए सौम्य और तर्कसंगत दृष्टिकोण अपनाने की सलाह दी जाती है। शिक्षकों को शैक्षणिक उपलब्धि और भावनात्मक परिपक्वता दोनों को बढ़ावा देने के लिए कक्षा में एक स्वतंत्र और सुरक्षित माहौल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

अध्ययन में मूल्यांकन प्रणालियों को अधिक छात्र-अनुकूल बनाने और छात्रों के समग्र विकास के लिए सतत और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) पद्धतियों को शुरू करने का भी सुझाव दिया गया है। इसके अतिरिक्त, यह इस बात पर जोर देता है कि शिक्षकों को सत्तावादी रुख नहीं अपनाना चाहिए और छात्रों को उचित स्वतंत्रता देनी चाहिए।

शैक्षणिक उपलब्धि और भावनात्मक विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए, स्कूल अधिकारियों को बेहतर सुविधाओं में निवेश करना चाहिए और एक अनुकूल वातावरण बनाना चाहिए। व्यापक स्तर पर, राष्ट्रीय शैक्षिक प्रणाली से अपनी शैक्षिक योजनाओं में भावनात्मक परिपक्वता के घटकों को शामिल करने और छात्रों के भावनात्मक विकास में सहायता के लिए परामर्श सेवाओं और मनोवैज्ञानिक पेशेवरों को शामिल करने पर विचार करने का आग्रह किया जाता है। माता-पिता के लिए पारिवारिक प्रशिक्षण बैठकें आयोजित करना भी इस संबंध में फायदेमंद हो सकता है। ये सिफारिशें सामूहिक रूप से छात्रों में भावनात्मक और शैक्षणिक विकास को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक रोडमैप के रूप में काम करती हैं।

संदर्भ

1. अग्रवाल, एस. (2013)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता, भावनात्मक परिपक्वता और आत्मविश्वास के संबंध में हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन, खंड 4(2), पृष्ठ 38।
2. क्रो, ए. और क्रो, एल.डी. (1985)। शैक्षणिक मनोविज्ञान। नई दिल्ली: एशिया पब्लिशिंग हाउस।
3. फिनले, जे. (1996)। 5 से 12 तक व्यवहार और विकास। न्यूयॉर्क: हार्पर और रो।
4. गुड, सी. वी. (1959)। डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन, न्यूयॉर्क: प्लेजर हिल बूम कंपनी इंक.
5. होकेनबरी, डी.एच. और होकेनबरी, एस.ई. (2007)। मनोविज्ञान की खोज. न्यूयॉर्क: वर्थ पब्लिशर्स।
6. कौर, एम. (2013)। वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान बुद्धि. पृ. 48-49.

7. मल्लिक, आर., सिंह ए., चतुर्वेदी पी., कुमार एन. (2014)। उच्चतर माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और उपलब्धि पर एक अध्ययन। प्रौद्योगिकी और प्रबंधन विज्ञान में अनुसंधान और विकास के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल—कैलाश। खंड—21(1).
8. सिंह, वाई. और भार्गव, एम. (1990)। भावनात्मक परिपक्वता पैमाना और भावनात्मक परिपक्वता पैमाना का मैनुअल। राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक सहयोग, आगरा।
9. स्मिटसन, डब्ल्यू.एस. (1974). भावनात्मक परिपक्वता का अर्थ. एमएच., 58(1), 9.
10. सुब्रमण्यम, एन. और वेलियाप्पन, ए. (2013)। हाई स्कूल के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता पर एक अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, वॉल्यूम। 3(11), पृ. 142—143.
11. सुरजीत, एस.पी. (2014)। हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में भावनात्मक परिपक्वता की भूमिका। जीएचजी जर्नल ऑफ सिक्सथ थॉट, वॉल्यूम। 1(1), पृ. 1—4.
12. वुडवर्थ, आर.एस. (1945) मनोविज्ञान, लंदन: मेथुएन।